दैनिक भास्कर
आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार
रायपुर
शनिवार, 3 फरवरी 2018

भारत रत्न प्रो. सीएनआर राव ने देश के एजुकेशन सिस्टम को बेहतर बनाने के बताए जरूरी उपाय

GDP का 6 फीसदी एजुकेशन पर खर्च होना चाहिए खत्म करना होगा बार-बार एग्जाम लेने का कल्चर

City Bhaskar Special

सिटी रिपोर्टर | रायपुर

रिसर्च वर्क के लिए अमेरिका में मैंने पांच साल गुजारे। काम पूरा होने के बाद इंडिया लौट आया। एक चीज, जिसने मुझे बहुत हताश किया वो है हमारे देश का एजुकेशन सिस्टम। यहां आज भी कई स्कूलों और कॉलेजों में साइंस इक्यूपमेंट, लैब, लाइब्रेरी की सुविधाएं नहीं हैं। मुझे हैरानी होती है कि जिस देश में इतनी पॉलिसीज चलाई जा रही हैं, हर योजनाओं और स्कीम में इतना पैसा लगाया जाता है, वहां एजुकेशन के लिए जीडीपी का लगभग 3 फीसदी खर्च किया जाता है। चीन और अमेरिका जैसे देशों में एजुकेशन पर ज्यादा जोर दिया जाता है। इस कमी को इंडिया से दूर करना चाहिए। ये बातें कहीं देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित प्रो. सीएनआर राव ने। पं. रविशंकर शुल्क यूनिवर्सिटी के केमेस्ट्री डिपार्टमेंट की ओर से आयोजित सीआरएसआई और रॉयल सोसायटी ऑफ केमेस्ट्री के चार दिवसीय सेमिनार में शिरकत करने शुक्रवार को शहर पहुंचे। इस दौरान सिटी भास्कर से खास बातचीत में प्रो. राव ने देश के मौजूदा एजुकेशन सिस्टम और इसकी कमियों पर खुलकर चर्चा की। उन्होंने कहा- एजुकेशन पॉलिसी को सुधारने की जरूरत है। खराब और खोखली होती जा रही पॉलिसी पर जिम्मेदारों को ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारे यहां जीडीपी का 3% एजुकेशन में खर्च किया जा रहा है। जबकि इसका 6% खर्च करने की जरूरत है। इसके बाद जरूरत से ज्यादा एग्जाम का कल्चर भी स्टूडेंट्स को चिढ़चिढ़ा बना रहा है। स्टूडेंट्स में कॉम्पिटीशन का डर हम खुद बना रहे हैं। अलग-अलग एग्जाम दे-देकर स्टूडेंट्स ईरीटेट हो रहे हैं।

प्रो. सीएनआर राव

यूथ को फैसिलिटी और मौका देने की आवश्यकता है

देश का टैलेंट गांवों में बसता है, इसे पहचानें

हमारे देश में 60 हजार मिलियन लोग रूलर एरिया में रहते हैं। भारत की असली प्रतिभाएं ग्रामीण क्षेत्रों में ही बसती हैं। देश का पूरा टैलेंट गांव में है। जरूरत इसे पहचानने की है। हमें स्कूली शिक्षा पर ध्यान देने की जरूरत है। विद्या और विज्ञान के बिना उन्नति असंभव है। सरकार को एजुकेशन और साइंस पर फोकस करने की जरूरत है।

टॉप-100 में भारत की कोई यूनिवर्सिटी नहीं

सिंगापुर जैसे देश की दो यूनिवर्सिटी टॉप 100 में है, लेकिन भारत की एक भी यूनिवर्सिटी का नाम नहीं है। इस पर हमें सोचना चाहिए। पहले की अपेक्षा आज बहुत से स्टूडेंट्स साइंस पढ़ रहे हैं। यूथ को फैसिलिटी और मौका देने की आवश्यकता है। मैं 85 साल की उम्र में रिसर्च करता हूं, बुक लिखता हूं। तो यूथ क्यों नहीं कर सकते।

बार-बार एग्जाम देने से यूथ में बढ़ता है स्ट्रेस

यूथ में तनाव का मुख्य कारण है बार-बार एग्जाम का कल्चर। स्कूली शिक्षा में तो बच्चों को हर महीने एग्जाम देने पड़ते हैं। देश में ऐसा सिस्टम लाने की जरूरत है, जिसमें बच्चों के ज्ञान का आंकलन एक परीक्षा में हो जाए। इसके अलावा हायर एजुकेशन और कॉम्पिटेटिव एग्जाम में भी बार-बार एग्जाम देने से स्टूडेंट्स में तनाव बढ़ता है।

एजुकेशन सिस्टम सुधरे तो हम बन सकते हैं विश्व गुरु

पं. दीनदयाल ऑडिटोरियम में केमेस्ट्री साइंस सेमिनार में प्रो. राव ने क्या भारत साइंस में विश्व गुरु बन सकता है? विषय पर रिसर्चर और स्कूली स्टूडेंट्स से इंट्रेक्ट हुए। उन्होंने कहा कि भारत में साइंस पर अपार संभावनाएं हैं। एजुकेशन सिस्टम में सुधार किया जाए तो जरूर भारत एक दिन विश्व गुरु बनकर दिखाएगा। छत्तीसगढ़ बहुत प्यारा प्रदेश है। सेमिनार में यूएसए के चेल्ला विजया कुमार, एके त्यागी ने भी लेक्चर दिया। यहां प्रो. शिवकुमार पांडेय, कुलसचिव संदीप वनसूत्रे सहित अन्य मौजूद थे।